86. भूगोल जगत में कार्ल रिटर के योगदान की समिक्षा करें।

→ बिखरे हुए ज्ञान को संग्रहित करने वाला विख्यात जर्मन विद्वान कार्ल रिटर एक महान भूगोलवेत्ता थे। वे हम्बोल्ट के समकालिन थे व आधुनिक वैज्ञानिक भूगोल के संस्थापक थे। इन्हें CLASSICAL PERIOD OF MODERN GEOGRAPHY का पर्याय माना जाता है।

जीवनि :- कार्ल रिटर का जन्म जर्मनी की हार्ज पहाड़ीयों में स्थित एक गाँव के साधारण परिवार में 1779 ई० में हुआ था। उनके पिता एक चिकित्सक थे जिनकी मृत्यु तभी हो गई थी जब रिटर पाँच वर्ष के थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा स्नेपफेन्थल नामक स्कुल में हुई। जहाँ प्रकृति के अध्यन में रुचि जागृत की जाति थी। इस प्रकार रिटर का चिंतण घर से शुरू हो कर गाँव, समाज, देश होता हुआ भूमण्डल और अन्त में ब्रह्मण्ड तक प्रसारित हो गया। 17 वर्ष की आयु में रिटर ने हैले विश्वविधालय में प्रवेश लिया।

रिटर 1798 से फ्रैंकफर्ट में रहने लगे। तथा पश्चमी यूरोप के अनेक स्थानों का भौगोलिक भ्रमण किया। लेकिन यह हम्बोल्ट की अपेक्षा बहुत कम था। इन यात्राओं के बाद प्रकाशित पुस्तकों एवं मानचित्रों के प्रकाशन से उसकी ख्याति फैली और 1819 ई० में फ्रैंकफर्ट विश्वविधालय में इतिहास व भूगोल का प्रोफेसर नियुक्त हुआ। एक ही वर्ष बाद वह नव स्थापित बर्लिन विश्वविधालय में भूगोल का प्रथम प्रोफेसर नियुक्त हुआ, जहाँ पर वह जीवन भर प्रध्यापन करता रहा।

रचनाएँ :- रिटर ने अपने जीवन काल में कई ग्रन्थ,

Scanned with CamScanner

मानचित्र एवं शोधपत्र प्रकाशित किए। उनमें से कुछ प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

(i) 'यूरोप का भौगोलिक इतिहास एवं सांख्यिक चित्रण' 1804 ई० में प्रकाशित हुआ जो इनका प्रथम ग्रन्थ था।

(ii) 'यूरोप का भूगोल' का दूसरा खण्ड 1807 में प्रकाशित हुआ

(iii) 1811 में शिक्षातंत्र पर कई शोधपत्रों का प्रकाशन हुआ

(iv) भौगोलिक ग्रन्थ अर्डकुन्डे के प्रथम खंड (अफ्रीका) का प्रकाशन 1817 में हुआ।

(v) अर्डकुन्डे के द्वितिय खंड (एशिया) का प्रकाशण 1818 में हुआ। रिटर ने भूगोल के लिए अर्डकुण्डे शब्द का प्रयोग किया था जो इनकी प्रमुख कृतियों में से एक था। भूगोल की परिभाषा रिटर के अनुसार — " GEOGRAPHY IS ~~A~~ THE DEPARTMENT OF SCIENCE THAT DEALS WITH THE GLOBE IN ALL ITS FEATURES, PHENOMENA AND ~~[illegible]~~ RELATIONS AS AN INDEPENDENT UNIT AND SHOWS THE CONNECTION OF THIS UNIFIED WHOLE WITH MAN AND WITH MAN'S CREATOR." "भूगोल विज्ञान का वह प्रभाग है, जिसमें भूमण्डल के सभी लक्षणों, घटनाओं व उनके सम्बंधों का, पृथ्वी को स्वतन्त्र रूप से मानते हुए वर्णन किया जाता है। इसकी समग्र एकता एवं जगत पिता से दिखाई देती है।"

<u>चिन्तण व अध्यन</u> :- रिटर की विचारधारा पर हम्बोल्ट के चिन्तण का प्रभाव पड़ा था। और इस बात को रिटर ने भी स्वीकार किया था परन्तु रिटर ने ~~[illegible]~~ भौगोलिक अध्यन के लिए प्रादेशिक विधि को अपनाया। जिसमें भौतिक एवं मानविय

कारकों के संश्लेषण पर बल दिया। रिटर ने अनेक प्रेरणादायी विचार प्रस्तुत किए। उसने दृढ़तापूर्वक कहा कि महाद्वीपों की पहचान भिन्न-भिन्न जाति एवं भिन्न-भिन्न रंगों के द्वारा होती है।

उनके अनुसार

अफ्रीका - काले लोगों का देश
यूरोप - गोरे लोगों का देश
एशिया - पीले लोगों का देश
अमरीका - लाल लोगों का देश

रिटर का मूल विषय था भौतिक भूगोल। तथा इनका मानना था कि भौतिक पर्यावरण मानव विकास के मार्ग को निश्चित करने में सक्षम है। रिटर की विचारधारा के मुख्य तत्व निम्नलिखित हैं—

(i) रिटर वातावरण निश्चयवाद को मानता था

(ii) रिटर के अनुसार किसी क्षेत्र की स्थिति, भौतिक लक्षणों, जलवायु और प्राकृतिक साधनों के सहसम्बन्धों द्वारा ही उस क्षेत्र के भौगोलिक व्यक्तित्व को समझा जा सकता है।

(iii) रिटर प्रकृति एवं मानव की अन्तः क्रिया तथा अन्तः संबंधों के अध्ययन द्वारा ईश्वरीय उद्देश्यवाद की विचारधारा को स्पष्ट करना चाहता था।

(iv) रिटर ने क्रमबद्ध विधि की जगह प्रादेशिक विधि को अपनाया परन्तु इकाई के रूप में राजनीतिक क्षेत्रों के बजाय प्राकृतिक प्रदेशों को चुना।

(v) रिटर अपने प्रादेशिक अध्ययन के द्वारा किसी क्षेत्र के क्षेत्रीय व्यक्तित्व को स्पष्ट करना चाहता था।

<u>संकल्पना</u> :- रिटर W.F. हिगल से ~~प्रभावित~~ ~~थे~~ प्रभावित थे। उन्होंने अनेकता में एकता के

Scanned with CamScanner

सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उन्होंने प्रकृति की अनेक गतिविधियों का वर्णन किया।

रिटर ने भूगोल के अध्ययन की चार विधियाँ बताई—

(i) अनुभाविक विधि
(ii) तुलनात्मक विधि
(iii) विश्लेषण व संश्लेषण विधि
(iv) मानचित्र विधि

मूल्यांकन :- रिटर एक बहुत बड़े भूगोलवेत्ता थे। उनका भूगोल के प्रति किया गया योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था। उनके लेखों से यह सिद्ध होता है कि पृथ्वी मनुष्य के निवास के लिए बनी है। जैसे - आत्मा के लिए शरीर बना है। रिटर ने 18 वीं शताब्दी के भूगोल शास्त्रियों के बिखरे हुए असंबद्ध विचारों को संगठित एवं संवर्द्धित किया और भूगोल का एक नवीन स्वरूप उपस्थित किया जो आज तक मान्य है।